SHAKUNTALAM INSTITUTE OF TEACHERS EDUCATION

KIRHINDIH, KUMHAU STATION ROAD, SHIVSAGAR

COURSE NAME – B.Ed. SESSION – 2020-22

SUBJECT - Learning and Teaching (C-3)

TOPIC NAME – Facilitator and Co-learner

DATE - 02/07/2021

B.Ed.- I[st] year

Paper - C.3 सुगमकर्ता के रूप में शिक्षक

Unit - 3

अध्यापकों को छात्रों की आवश्यकताओं एवं समस्याओं का अच्छा ज्ञान होता है। क्योंकि वे छात्रों के अधिक निकट सम्पर्क में आते हैं तथा छात्रों का अध्ययन विभिन्न परिस्थितियों में करते हैं। अतः वे निर्देशन तथा परस्पर कार्य में व्यापक सहयोग दे सकते हैं।

अध्यापकों का इस दिशा में प्रमुख उत्तरदायित्व निम्नलिखित हो सकते हैं—

ॐ छात्रों के साथ व्यक्तिगत सम्पर्क स्थापित करना।

ॐ छात्रों के विकास के लिए उचित परिस्थितियाँ प्रदान करना।

ॐ कुसमायोजित छात्रों का पता लगाना।

ॐ छात्रों के अभिभावकों से समय - समय पर छात्रों की प्रगति के बारे में परामर्श करना

अध्यापक कक्षा में छात्रों की व्यक्तिगत भिन्नताओं पर ध्यान देता है। प्रगतिशील शिक्षण - अधिगम विधियों का प्रयोग करता है।

कक्षा - कक्ष अनुदेशन में अध्यापक के प्रबंधक तथा सुगमीकरणकर्ता के रूप में मुख्य कार्य :—

- कक्षा को संगठित तथा व्यवस्थित रखना।
- विषय - वस्तु तथा कार्य का विश्लेषण करना।
- छात्रों के अधिगम की समस्याओं का निदान करना।
- छात्रों की व्यक्तिगत विभिन्नता की जानकारी प्राप्त करना।
- छात्रों के प्रारंभिक व्यवहार को समझना।
- शिक्षण की योजना युक्तियों तथा प्रविधियों का निर्माण एवं चयन करना।
- सुनिश्चित विधियों, युक्तियों के सहारे सुनिश्चित शिक्षण - उद्देश्यों के लिए सुनिश्चित पाठ्यक्रम को प्रस्तुत करना।
- अभिवृद्धि, विश्वास, सम्प्रत्यय एवं समस्याओं को स्पष्ट करना।
- मूल्यांकन करना।

'सह-अधिगमकर्ता' के रूप में शिक्षक

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (NCF-2005) में स्पष्ट कहा गया है कि अध्यापक की शिक्षा को स्कूली अवस्था की उभरती माँगों के प्रति अधिक संवेदनशील होना चाहिए। उसे शिक्षकों को इसके लिए तैयार करना चाहिए कि वे एक सहयोगकर्ता के रूप में अपनी भूमिका निभाएँ —

⇒ उनको उत्साहवर्धक, सहयोगी और मानवीय होना चाहिए जिससे विद्यार्थी अपनी सम्भावनाओं का पूर्ण विकास कर जिम्मेदार नागरिक के रूप में अपनी भूमिका निभाएँ।

⇒ ऐसे व्यक्तियों के समूह का सक्रिय सदस्य बने जो लगातार सामाजिक और विद्यार्थियों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं को ध्यान में रख कर सजगता से पाठ्यचर्या सुधार कर सके।

⇒ इस दृष्टि को साकार करने के लिए यह ध्यान देने की आवश्यकता है कि शिक्षक प्रशिक्षण में ऐसे तत्व समाहित हों जो विद्यार्थी शिक्षक को निम्न दशाओं में सक्षम बनाएँ —

- सीखना किस प्रकार होता है, उसकी समझ उसमें हो और वह उसके अनुकूल माहौल बनाए।
- भाषा की गहरी समझ और दक्षता हासिल करें।
- अपनी आकांक्षाओं, स्व-समझ, क्षमताओं और रुझानों को पहचानें।
- वह शिक्षक के रूप में पेशेवर उन्मुखीकरण का प्रयास करें।
- मूल्यांकन को सतत शैक्षिक प्रक्रिया माने।
- कला शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों में कला और सौन्दर्यबोध समझ का विकास कर सकें
- परामर्श से कौशल और क्षमताओं का विकास कर सके ताकि बच्चों के शैक्षणिक व्यक्तिगत और सामाजिक स्थितियों का समाधान सुझाने में उसे सुविधा हो।

अच्छे व प्रभावी शिक्षक की विशेषताएँ

एक अच्छे व प्रभावी शिक्षक की निम्नलिखित विशेष-ताएँ हैं —

1. एक सफल अध्यापक छात्र-प्रेमी होता है तथा विद्यार्थियों के विकास में रुचि लेकर कठिनाइयों को हल करने में तत्पर रहता है। छात्रों के हित-चिंतक अध्यापक लोकप्रिय होते हैं।

2. अध्यापक शारीरिक एवं मानसिक रूप से स्वस्थ एवं चरित्रवान होना चाहिए।

3. एक अध्यापक में नेतृत्व प्रदान करने की क्षमता होनी चाहिए।

3. अध्यापक का व्यक्तित्व प्रभावशाली होना चाहिए अर्थात वह अपने सम्पर्क में आने वाले छात्रों एवं अन्य व्यक्तियों का आदर एवं स्नेह प्राप्त करसकने में सक्षम हो।

4. अध्यापक को मनोविज्ञान का व्यवहारिक ज्ञान आवश्यक है, जिससे कि वह बालकों की व्यक्तिगत विभिन्नताओं तथा रुचियों, अभिरुचियों प्रेरणाओं योग्यताओं एवं क्षमताओं को समझ कर उचित मार्गदर्शन कर सके।

5. अध्यापक को अपने विषय पर पूर्ण अधिकार होना चाहिए अर्थात उसके ज्ञान का स्तर इतना हो कि उसे पुस्तक अथवा नोट्स का दास न बनना पड़े। शिक्षक को अपने विषय पर पूर्ण स्वामित्व होना चाहिए।

6. अध्यापक की रुचियाँ विविध होनी चाहिए। विशेषकर पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं तथा खेल कूद में अध्यापक को अपना उचित योगदान प्रदान करना चाहिए।

7. अध्यापक को बदलते हुए परिवेश के साथ समायोजन की क्षमता से युक्त होनी चाहिए। शिक्षक को नई पीढ़ी का समायोजन करना होता है।

8. अध्यापक में कल्पना शक्ति एवं सार्वजनिकता होनी चाहिए। यह उसके क्रियाकलापों में स्पष्टत: दिखाई देनी चाहिए।

9. अध्यापक सत्यवादी सहिष्णु तथा ईमानदार होना चाहिए। इन गुणों से युक्त प्रसन्नचित अध्यापक छात्रों को बहुत ही प्रिय होता है।

10 शिक्षक के कथनी एवं करनी में अंतर नहीं होना चाहिए।